Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JULY-AUGUST, 2022, VOL- 10/72

भारत एवं म्यांमार के राजनीतिक–मैत्री सम्बन्धों का विश्लेषण

Pritam Kumar[1] & Richa Bajaj[2], Ph. D.

[1]*Assistant Professor Department of Military Science, Shri Varshney College, Aligarh*

[2]*Associate Professor Department of Political Science, Shri Varshney College Aligarh*

Paper Received On: 25 AUGUST 2022
Peer Reviewed On: 31 AUGUST 2022
Published On: 01 SEPTEMBER 2022

Abstract

भारत का आकार, इसकी सामरिक अवस्थिति, व्यापारिक संबंध और अनन्य आर्थिक क्षेत्र इसके सुरक्षा परिवेश को सीधे विस्तृत भू–भाग, विशेषकर पड़ोसी देशों और मध्य एशिया, दक्षिण–पूर्वी एशिया, खाड़ी देशों और हिंद महासागर से जोड़ते हैं। इन सामरिक–आर्थिक कारकों से भारत पर निरंतर एक वृहत्तर जिम्मेदारी आन पड़ती बहु–आयामी सुरक्षा चिंताओं और चुनौतियों के वैश्विक आयामों को देखते हुए, भारत ने बहुपक्षीय संस्थाओं में अपनी भागीदारी सुदृढ़ की है और विभिन्न देशों के साथ अपनी सामरिक साझेदारियों को मजबूती प्रदान की है जिससे कि क्षेत्रीय और वैश्विक शांति और स्थिरता में, एक जिम्मेदार हितधारक के रूप में, सफलतापूर्वक योगदान किया जा सके। भारत–म्यांमार के संबंधों को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, जातीय और धार्मिक रिश्ते सुदृढ़ हुए हैं। भारत की म्यांमार के साथ व्यापार और अवसंरचना सहित विभिन्न मोर्चों पर सहभागिता है। सुरक्षा संबंधी मामलों में भी सहयोग का अनुसरण किया जा रहा है। पुर्व प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह के नेतृत्व में भारत व म्यांमार के बीच लगभग एक दर्जन से अधिक समझौतों पर हस्ताक्षर किये गए, जिनमें प्रमुख रूप से विकास व संयोजकता सम्मिलित थे। 500 मिलियन डालर का रियायती ऋण, व्यापार व निवेश में बढ़ोत्तरी, जिसमें ऊर्जा व विद्युत क्षेत्र भी शामिल थे और शिक्षा, क्षमता निर्माण और लोगों में आपसी संपर्क हेतु सहयोग बढ़ा कर संस्कृति की केन्द्रीयता का लाभ नियिचत ही दोनों देशों को प्रप्त हो रहे हैं।

Keywords: *स्थलाकृति, सामरिक महत्व, रक्षा–समझौते, बाजार परस्पराधीनता।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

विश्लेषण एवं निष्कर्षः भारत की स्थलाकृति विविधताओं से परिपूर्ण है जहां बर्फ से ढकी 28,000 फुट से अधिक ऊंची हिमालय की चोटियों से लेकर

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

घने जंगल और विस्तृत मैदानीभू–भाग हैं। उत्तर में सियाचिन ग्लेशियर विश्व में सबसे ऊंचा रणक्षेत्र है जहां 21,000 फुट की ऊंचाई पर भी चौकियां स्थित हैं। भारत की पश्चिमी सीमा रेगिस्तानों, उपजाऊ मैदानों और घने जंगलों से ढके पहाड़ों से होकर गुजरती है। पूर्वोत्तर सीमा में भी खड़ी, ऊंची पर्वत श्रृंखलाएं और घने उष्ण कटिबंधीय वन हैं। दक्षिण में समुद्र के निकटवर्ती पहाड़ी श्रृंखलाएं, अंदरूनी भू–भाग में पठार और इसके बीच–बीच में नदी घाटियां, तटीय मैदान और पश्चिम में लक्षद्वीप तथा पूर्व में अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह जैसे दूर–दराज में स्थित द्वीपीय क्षेत्र हैं। गुजरात से लेकर पश्चिम बंगाल तक देश के तीन ओर की सीमा अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी से घिरी है। हमारे पूर्वी तट में निकटतम बिंदु से 1300 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह मलक्का जलडमरुमध्य में प्रवेश के **वि**चार धारा से सम्बद्ध आतंकवाद का उदगमन, छोटे अस्त्रों और हल्के हथियारों (एस ए एल डब्ल्यू) का विस्तार, जनसंहार के हथियारों का प्रसार और इसकी अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण कुछ ऐसे कारक हैं जोभारत की सुरक्षा को सीधे विस्तृत भौगोलिक परिवेश से जोड़ते हैं संबंध में सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है । अरब सागर में लक्षद्वीप और मिनिकॉय द्वीपसमूह, जो फारस की खाड़ी और लाल सागर से पूर्वाभिमुखी समुद्री संचार मार्ग पर अवस्थित है , पश्चिमी तट पर निकटतम बिंदु से 450 किलोमीटर की दूरी पर हैं। इस प्रकार भारत समुद्रवर्ती और महाद्वीपीय देश, दोनों है। भौगोलिक और स्थलाकृतिक विविधता, विशेषकर हमारे सात पड़ोसी देशों (अर्थात् अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, चीन, म्यांमार, नेपाल और पाकिस्तान) के साथ लगी भू–सीमा की विविधता हमारे सशस्त्र बलों के सामने बेमिसाल चुनौतियां पेश करती है। भारत का प्रायद्वीपीय भू–भाग स्वेज नहर और फारस की खाड़ी से मलक्का जलडमरूमध्य तक फैले विश्व के एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग के सन्निकट है। प्रतिवर्ष 55,000 जहाज और खाड़ी देशों से अधिकांश तेल इस मार्ग से होकर गुजरते हैं।

इसके अतिरिक्त, भारत का आकार, इसकी सामरिक अवस्थिति, व्यापारिक संबंध और अनन्य आर्थिक क्षेत्र इसके सुरक्षा परिवेश को सीधे विस्तृत भू–भाग, विशेषकर पड़ोसी देशों और मध्य एशिया, दक्षिण–पूर्वी

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

एशिया, खाड़ी देशों और हिंद महासागर से जोड़ते हैं। इन सामरिक–आर्थिक कारकों से भारत पर निरंतर एक वृहत्तर जिम्मेदारी आन पड़ती बहु–आयामी सुरक्षा चिंताओं और चुनौतियों के वैश्विक आयामों को देखते हुए, भारत ने बहुपक्षीय संस्थाओं में अपनी भागीदारी सुदृढ़ की है और विभिन्न देशों के साथ अपनी सामरिक साझेदारियों को मजबूती प्रदान की है जिससे कि क्षेत्रीय और वैश्विक शांति और स्थिरता में, एक जिम्मेदार हितधारक के रूप में, कारगर ढंग से योगदान किया जा सके। भारत–म्यांमार के संबंधों को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, जातीय और धार्मिक रिश्ते सुदृढ़ बनाते हैं। भारत की म्यांमार के साथ व्यापार और अवसंरचना सहित विभिन्न मोर्चों पर सहभागिता जारी है तथा सुरक्षा संबंधी मामलों में भी सहयोग का अनुसरण किया जा रहा है। म्यांमार सरकार ने आश्वासन दिया है कि इसके राज्य–क्षेत्र से भारत–विरोधी गतिविधियां चलाए जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

भारत के रक्षा सहयोग संबंधी कार्यकलापों में मित्र विदेशी देशों के साथ रक्षा संबंधों को सुदृढ़ करना शामिल है। इस संबंध में रक्षा मंत्रालय और सशस्त्र बलों द्वारा किए गए सभी सम्पर्कों औरविनिमयों का लक्ष्य, संघर्षों को रोकना और उसके समाधान के लिए उल्लेखनीय योगदान करना तथा विश्वास पैदा करना और उसे बनाए रखना है। रक्षा सहयोग भारत–म्यांमार द्विपक्षीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू है। म्यांमार के साथ चल रहे रक्षा सहयोग संबंधी कार्यकलापों में यात्राओं का नियमित आदान–प्रदान, भारतीय नौसेना के जहाजों द्वारा पोर्ट कॉल्स तथा प्रशिक्षण आदान–प्रदान शामिल है। नौसेनाध्यक्ष ने 24–26 अगस्त, 2011 के बीच म्यांमार की यात्रा की। सेनाध्यक्ष ने 6–9 जनवरी, 2012 के बीच म्यांमार की यात्रा की।

भारत की म्यांमार नीति काफी हद तक चीन से प्रभावित है। चीन का म्यांमार के दक्षिणी हिस्से में प्रसार से, जो इरावदी नदी से होते हुए अरकान द्वीप तक फैला हुआ है, भारत को अपने घेरे में लेने की साजिश है। बंगाल की खाड़ी उसका लक्ष्य है। उत्तरी म्यांमार में चीन की पकड़ कोच्चीन तक है जिसकी सीमाएं भारत के पूर्वोत्तर राज्य अरूणाचल प्रदेश से सटी हुई हैं।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

चीन पहले ही अरूणाचल प्रदेष पर अपना दावा ठोंक चुका है। वह अपनी विवादास्पद टिप्पणियों से भारत को परेषान करने की कोषिष करता रहा है

अगर भारत म्यांमार से अपने बेहतर संबंध बनाकर अपनी सुरक्षा का सुदृढ़ प्रबंध कर लेता है तो उसके पूर्वोत्तर राज्य चीन के सामरिक खतरे से सुरक्षित हो जाएंगे। भारत को म्यांमार सीमा से सटे हुए इलाकों में उग्रवादी और अलगाववादी तत्वों को पकड़ने में सहायता भी मिलेगी। म्यांमार में सैनिक देश की मजबूत दीवार हैं उल्लेखनीय है कि 1988 के आम चुनाव में आंग सू की पार्टी को भारी समर्थन प्राप्त हुआ था लेकिन सैनिक तानाशाही ने सत्ता हस्तांतरण को नामंजूर करते हुए आंग सू की को उनके घर में ही नजरबंद कर दिया। पिछले तीन दषकों में म्यांमार में सैनिकों की संख्या तेजी से बढी हैं अगर सेना के तीनों अंगो को मिला दिया जाए तो यह आंकड़ा चार लाख से अधिक हो जायेगा।

चीन अपनी सामरिक रणनीति के तहत म्यांमार में वर्शो से अपना जाल बिछा रहा है। म्यांमार में रेल और सड़कों का जाल बिछाया जा रहा है, जिससे चीन और म्यांमार के बीच आवागमन सुगम हो सके। चीन के दो राज्यों की सीमाएं म्यांमार से मिलती है। यह राज्य समुद्री सीमा से दूर हैं इसलिए चीन इन क्षेत्रों में अपना जाल बिछा कर हिंद महासागर में अपनी पैठ बनाने की प्रयास में लगा हुआ है।

म्यांमार पिछले कुछ वर्शो से सामरिक केंद्रबिंदु बना हुआ है। विशेषकर भारत की सुरक्षा म्यांमार से बहुमुखी रूप से प्रभावित हो रही है। चीन की छाया दिन प्रतिदिन भारतीय हितों को चुनौती दे रही थी लेकिन म्यांमार के नए राष्ट्रपति थीन सेन ने कई क्रांतिकारी कदम उठाकर अपने देष के कठोर राजनीतिक ढांचे की उदारवादी व्यवस्था को बदल दिया है। म्यांमार ने न केवल आंग सान सू की रिहाई की, बल्कि उनकी बहुचर्चित राजनीतिक पार्टी नेशनल लीग ऑफ डेमोक्रैसी (एनएलडी) को चुनाव लड़ने की छूट भी दे दी। इसके साथ, हजारों एनएलडी कार्यकर्ताओं को भी जेल से रिहा कर दिया गया। नव निर्वाचित राश्ट्रपति ने चीन से एक सुनिष्चित दूरी बनाने का मन भी बना लिया। चीन के विवादास्पद डैम पर, जो इरावदी नदी पर बनाया जाना था, रोक लगा दी गई। यह बदलाव म्यांमार की विदेष नीति में बुनियादी परिवर्तन का सूचक है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

म्यांमार में राजनीतिक परिवर्तन से लोकतंत्र की बहाली का मसला सुलझने लगा है। ट्रेड यूनियन पर लगाए गए प्रतिबंध भी उठा लिए गए हैं। राजनीतिक विरोध और प्रेस की स्वतंत्रता को बहाल करने की कोषिष की जा रही है। अमेरीकी आर्थिक प्रातिबंध को हटाने की महत्वपूर्ण शर्ते भी यही थीं। इसलिए अमेरीकी षर्तो के पूरा होने से आर्थिक नाकेबंदी खत्म होने वाली है। अमेरीका पिछले कुछ वर्शो से मन बना चुका था कि म्यांमार में समुचित राजनीतिक परिवर्तन हो, और एक नई व्यवस्था के तहत म्यांमार और अमेरीका के बीच टूटे हुए तार को जोड़ा जाए। भारत इस कड़ी को जोड़ने की पूरी कोशिश कर रहा था और उसे इसमें सफलता भी मिली। इस बदले घटनाक्रम को अंतर्राष्ट्रीय मानचित्र पर देखना होगा। चूंकि म्यांमार की अंदरूनी राजनीति में बदलाव महज वहीं तक ही सीमित नहीं है इसलिए उसका प्रभाव एक नए परिवर्तन की आहट है। चीन अपनी दूरवादी परियोजना पर प्रतिबंध लगने से दुःखी है। उसे निराषा से ज्यादा आश्चर्य हो रहा है।

भारत ने म्यांमार में मानवतावादी एवं विकासात्मक प्रयासों को भी त्वरित किया है। प्रलयंकारी चक्रवात ‘नर्सिग‘ के बाद, जो मई 2008 में म्यांमार में आया था, भारत ने तुरंत व सहायता का प्रस्ताव पेश किया। हाल में, भारत ने 1 मिलियन अमरीकी डालर की सहायता शान राज्य में आये भूकंप से पीड़ित क्षेत्रों में मानवतावादी राहत व पुनर्वास के लिए प्रदान की। इस राशि में से 250,000 अमरीकी डालर म्यांमार सरकार को नगद अनुदान के रूप में दिए गए ओर 750,000 अमरीकी डालर तारले कसबे में, जो कि भूकंप से सबसे बुरी तरह पीड़ित था, एक हाई स्कूल व छः प्राथमिक स्कूलों के निर्माण के लिए प्रदान किये। भारत और म्यांमार के सम्बन्ध 1993 से बेहतर होने लगें, उसमें म्यांमार के घरेलू वातावरण में परिवर्तन ने भी नई दिल्ली को म्यांमार की ओर मैत्री का हाथ बढ़ने में योगदान दिया। ये परिवर्तन थे : 2008 संविधान का प्रख्यापन, नवम्बर 2010 के चुनाव एक नई संसद, और अप्रैल 2012 में उपचुनाव। नवम्बर 2010 में स्यु की रिहाई व प्यित्हू हलुत्ताव (म्यांमार अवर संसद) में चुनाव, पश्चिम को विश्वास दिलाना की म्यांमार लोकतांत्रिक सुधारे लाने के लिए ‘गंभीर‘ है। अतः दोनों संयुक्त राश्ट्र अमेरीका व युरोपीय संघ ने अपने

प्रतिबन्ध स्थगित कर दिए और वाषिंगटन ने हिलेरी क्लिंटन की म्यांमार यात्रा से अपने नीति बदलाव का संकेत किया।

प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने नयी राजधानी प्यी टाव में अपने आगमन पर, भारत व म्यांमार के बीच लगभग एक दर्जन समझौतों पर हस्ताक्षर किये जिनमें मुख्य संकेत–शब्द विकास व संयोजकता थे, और 500 मिलियन डालर का रियायती ऋण, व्यापार व निवेश में बढ़ोत्तरी, जिसमें ऊर्जा व विद्युत क्षेत्र भी शामिल थे और षिक्षा, क्षमता निर्माण और लोगों में आपसी संपर्क हेतु सहयोग बढ़ा कर संस्कृति की केन्द्रीयता का फायदा उठाना। भारत को म्यांमार के, साथ, उस देश में रह रहे भारतीय अप्रवासियों के बारे में, सक्रिय रूप से बातचीत करनी होगी। भारतीय अप्रवासियों, ‘भारत माता के भूले हुए बच्चे,‘ के पास न उनके मूल देश में जमीन है, न उनके अपनाए हुए देश में, और दोनों में से कोई भी सरकार इस बात से सम्बद्ध‘ नहीं है। मगर इन अप्रवासियों को अब पहचान मिलनी आरम्भ हुई है। सिंघवी समिति रिपोर्ट के अनुसार, म्यांमार में कुल भारतीय लोग, अनुमान लगाया जाता है कि, 2.9 मिलियन हैं, जिसमें से 2,50,000 भारतीय मूल के लोग हैं (PIO), 2,000 भारतीय नागरिक हैं, और 4,00,000 किसी भी देश के नागरिक नहीं है। म्यांमार स्वयं भारत से संबंधों का सामान्यीकरण चाहता है, ऐसे में नई दिल्ली आत्मसंतुष्ट नहीं रह सकता। बारी–बारी से म्यांमार सरकार को सहयोग देना, फिर आलोचना करना, भारत की ‘नैतिकता‘ व ‘सेना‘ अंतःक्रिया मॉडल, जो ‘बाजार परस्पराधीनता‘ के नव उदार सिद्धांतों पर आधारित है, उम्मीद है की यह दोनों पड़ोसियों के बीच आगे बढ़ने की राह बनाएगा और प्रगति औ विकास का दौर आरम्भ होगा। इसके लिए, भारत व म्यांमार को परस्पर ‘संयुक्त वक्तव्य‘ का अक्षरशः पालन करना होगा।

References

Bajpai, U.S. (2013), India's Security, Lanur Books, New Delhi.

Bhattacharya, S. (2015), Pursuit of National Interests Through Neutralism (Calcutta,).

Desai, W.S. (2016), A History of British Residency in Burma, 1826-1840 (Rangoon : University of Rangoon Press).

Dixit, J.N. (2016), India's Foreign Policy and Its Neighbors, Gyan Pub. House, New Delhi.

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Dubey Muchkund (2017), South Asia and Its Eastern Neighbours : Building a Relationship in the 21st Century, Konark Publishers Pvt. Ltd., New Delhi.

Dutt, V.P. (2018), India's Foreign Policy, Vikas Publishing House, New Delhi.

Sen, Rabindra (2018), South East Asia : Secruity in the Coming Millenium, Allied Publishers Pvt. Ltd., New Delhi.

Jain, Pal and Pant, Pushpesh (2018), Theory and Practice of International Relations, menakshi Prakashan, Meerut.

Jha, Nalini Kant (ed.) (2018), India's Foreign Policy in Changing World, New Delhi.

Kothari, D.S. (2020), Nuclear Explosion, Publications Division, Delhi.

Kumar Mahendra(2020), Theoretical Aspects of International Relations, Shiva Lal Agarwala & Co. Educational Publishers Agra.

Kundra, Jagdish Chandra (2020), Indian Foreign Policy, 1947-1954 (Bombay : Vora).

Lall, K.B. (ed.) (2020), The European Community and SAARC, New Delhi. Rajan, M.S. (2021), India and International Affairs, Lancer Books, New Delhi.

Tripathi, Shri Prakash Mani, India and Asean-10 (2021), Jnanada Prakashan (P&D), New Delhi.

Varma Seema (2021), Foreign Policy of India, Mohit Publications, New Delhi.

श्रीवास्तव बी0पी0 (2019), भारत एवं विश्वः बदलते परिदृश्य India Publication, New Delhi.

खन्ना, वी0एन0, अरोड़ा, लिपाक्षी (2019), भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

दत्त वी0पी0 (2013), बदलते विश्व में भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies